आँसमा पे ठिकाने ..किसी के नहीं होते
जो जमीं के नही होते ...वो कहीं के नहीं होते

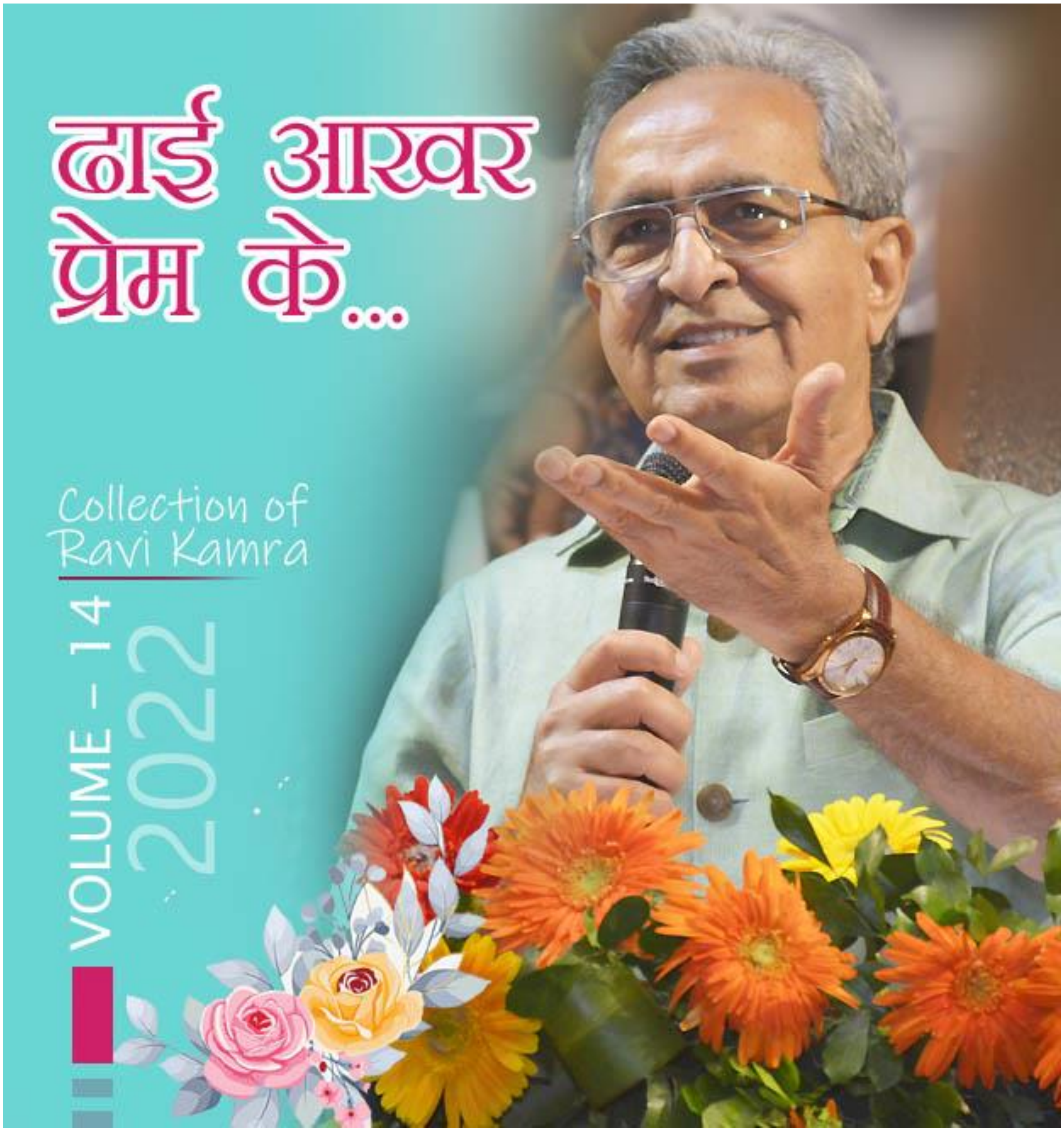

समय के पास भी इतना समय नहीं कि
वो आपको दोबारा समय दे सके.. ⏰

इंतज़ार सबका नहीं करता मैं.
जिनका करता हूँ,'वे' आते..ज़रूर हैं.
इंतेज़ार एक आस्था है मेरे लिए,और..
'आने वाला'..आराध्य.

हमने तुम्हें देखा नहीं क्या ईद मनाएँ ?
जिसने तुम्हें देखा हो उसे ईद मुबारक

जमाने भर की रौनक से हमे क्या वास्ता,
हमारा चांद मिल जाए तो हमारी ईद हो जाए।

जिनके पास आपके लिए Time ना हो

उनको कभी Disturb मत करना

बनते बनते रह गई बात
यूँ तो हम दोनों राज़ी थे
-आज़िम कोहली-

हम किसी और को पढ़ने का हुनर क्या जानें
अपना चेहरा ही हमें रोज़ नया लगता है

किसी का दिल धड़कता है, किसी की छत टपकती हैं,
अलग अलग मसले हैं लोगों के, जब बूँदें बरसती हैं ।।

'रहिमन' प्रीति न कीजिए ,जस खीरा ने कीन ।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फांकें तीन ॥
~ रहीम

कबिरा कुआँ एक है पानी भरें अनेक
बर्तन में ही भेद है पानी सब में एक॥
~ कबीर

जफ़ा की आग थम जाए, फख्र टूटे कभी 'मोहसिन'
चले आना मेरे होकर मैं माज़ी फिर भुला दूंगा।

लोग इत्तिफाक से.... सिर्फ मिलते है,
बिछड़ते सब ..अपनी मर्जी से है ..

नाच नचाती है जब कोई मुश्किल आज़िम
ढोल बजाने वाले सब अपने होते हैं
-आज़िम कोहली-

रक़्बा तुम्हारे बाग़ का, मीलों सही, मगर
रक़्बा तुम्हारे दिल का, दो इंच भी नहीं
- अकबर इलाहाबादी

किसी के पास रहना हो
तो थोड़ा दूर रहना चाहिए
- जॉन एलिया

हमको भी तेज़ लगती थी रफ़्तार वक़्त की
लेकिन ये इंतिज़ार से पहले की बात है
- राजेश रेड्डी

आँसमा पे ठिकाने ..किसी के नहीं होते
जो जमीं के नही होते ...वो कहीं के नहीं होते

बातें ... वो बे'वजह वाली !
... फिर से करें, एक बार ....

क्या कीजिए मलाल,जवानी का ऐ 'वसीम'
आँगन की धूप थी, इधर आई उधर गयी
-वसीम बरेलवी

तेरा इनकार वाजिब है ख़िज़ाँ के दौर में ऐ दोस्त
भला सूखे शजर की जड़ में पानी कौन देता है

वक्त मेरा भी बदलेगा,

बस घड़ी में सेल डालने की देर है 😝

तुम्हारे दम से हैं मेरे लहू में खिलते गुलाब
मिरे वजूद का सारा निज़ाम तुम से है ...!
- वसी शाह

बाक़ी सब सपने होते हैं
अपने तो अपने होते हैं

एक आँसू कोरे काग़ज़ पर गिरा
और अधूरा ख़त मुकम्मल हो गया
- राजेश रेड्डी

बहुत दिनों बाद
बारिश में महकी
मिट्टी की सौंधी सुगंध
द्वार पर लौट आए
प्रणय के अपार अनुबंध
चलो भीतर तक
भीग जाएं
आओ आज तोड़ दे
मन के सारे
प्रतिबंध, प्रिय

तुम्हारे प्यार का रोग नही जाता ,
गले मे डाल कर मैंने सैकड़ो ताबीज़ देखे है...

तुझ पे खर्च करने के लिए
बहुत कुछ नहीं है मेरे पास,
बस थोड़ा सा वक़्त है.... थोड़ा सा मैं हूँ..!!!

समाज एक ऐसा बाजार है,
जहां सलाह थोक में
और सहयोग
ब्याज पर उपलब्ध है....

वो हो तुम्हारी
'मुस्कुराहट'
या..गाहे-बगाहे
गिरने वाली
तुम्हारी शरारती
नज़र मुझपे ?
यही 'असल कमाई' है मेरी.
कुछ ऐसी ही
'बख्शीशों' से
चलती है मेरे दिल की
'रोजी-रोटी'.

ठीक हूं --
ये तो हम किसी से भी कह सकते हैं ,
लेकिन परेशान हूं
कहने के लिए कोई बहुत ही खास होना चाहिए

कली का तब्बस्सुम गुलों की हंसी
किसी की तो होगी ये जादूगिरी
समझते थे जिसको हम आसान बहुत
वही ज़िन्दगी निकली मुश्किल बड़ी
हमें याद है कल कि मानिन्द सब
वो देखी न देखी , कही अनकही

बिना वजह की उदासी छोड़
दोस्ती मुस्कुराहटों से करते हैं
ज़िंदगी तुझसे ही नहीं अब हम
ख़ुद से भी बहुत प्यार करते हैं

तुमने नाराज़ होना छोड़ दिया,
इतनी नाराज़गी भी ठीक नहीं।
~ फ़हमी बदायूनी

बेवजह नाराज ना होना
मैं वज़ह बन ने को तैयार हूं...

शायद तेरा ठौर ठिकाना, मिल ही जाए!
ध्यान लगा कर अपने अंदर, देख रहा हूं!

कोई तवील उम्र भी यूँ ही जिया नसीम
कोई ज़रा सी उम्र में इतिहास रच गया

फ़ैसला लिखा हुया रखा है ख़िलाफ़
आप क्या ख़ाक अदालत में सफ़ाई देंगे

तेरे चेहरे को जो मिल जाएँ हमारी आँखें
फिर तुझे हम न कभी ग़ैर दिखाई देंगे

मुश्किल हो जाता है तय करना ज़िन्दगी में कि गलत क्या है
वो झूट जो चेहरे पे मुस्कान लाये
या
वो सच जो आँखों में आँसू ले आये...

एक तुझे सोचने के ख़ातिर
जाने कितने काम हम कल पे टाल देते है !

मेरा दर्द किसी की हसने की वजह जरुर बन सकता है!
लेकिन मेरी हसी किसी के दर्द की वजह नहीं बननी चाहिए!

जितना दर्द दे सकता है दे दे ऐ खुदा,
हम तेरी ही इबादत से उन पर फ़तेह करेंगे...

ताल्लुक हो तो रूह से रूह का हो......
दिल तो अक्सर एक दूसरे से भर जाया करते हैं.....

मुझे रिश्तो की लंबी कतारोँ से मतलब नही ,
कोई दिल से हो मेरा, तो एक शख्स ही
काफी है..।

हैरान है सब महफ़िल में रोशनी क्यों है
इक सितारा जो ज़मीं पर उतर आया है

बोली हुई हर बात ग़ज़ल होती है
आँख उठ के जो झुक जाए ग़ज़ल होती है
हाथ रख दें जो कभी वो हमारे दिल पे
दिल में धड़कन नहीं होती फिर, ग़ज़ल होती है

हम अल्फ़ाज़ों को ढूंढते रह गए,
और वो आँखों से गज़ल कह गए !💞

ज़िन्दगी को समझने में वक़्त न गुज़ार,
थोड़ी जी ले,
पूरी समझ में आ जायेगी..

माना कि जीत की आदत है .. मग़र..
रिश्तों में हार जाना बेहतर होता है .

हम ये नहीं चाहते की कोई आपके लिए ‘दुआ’ ना मांगे
हम तो, बस इतना चाहते है की
कोई ‘दुआ में ‘आपको’ ना मांगे

कुछ दूर हमारे साथ चलो हम दिल की कहानी कह देंगे,
समझे न जिसे तुम आँखों से वो बात जुबानी कह देंगे !

बड़े अजीब से हो गए रिश्ते आजकल ,,
सब फुरसत में हैं पर वक़्त किसी के पास नहीं .. .

गतिमान है काल का पहिया,
अनमोल समय न कर तू व्यर्थ,
सांस के रथ के रुकने से पहले,
ढूंढ ले अपने होने का अर्थ...

लिखने की कोशिश हर रोज होती है
कभी अल्फाज़ कम पड़ जाते हैं
कभी एहसास

💕 आशाएं ऐसी हो जो-
मंजिल तक ले जाएँ,
मंजिल ऐसी हो जो-
जीवन जीना सीखा दे,
जीवन ऐसा हो जो-
संबंधों की कदर करे,
और संबंध ऐसे हो जो-
याद करने को मजबूर करदे ।

क्या किस्मत पाई है, इन रोटियों ने भी
अमीरों ने आधी फेंक दी,
गरीबों ने आधी पर ज़िन्दगी निकाल दी

इश्क का भी अलग ही हिसाब है,
पल भर में हो जाता है उम्र भर के लिए.... ❤️

आइने में शख़्स इक
हू ब हू मुझ सा ही था
-आज़िम कोहली-

कभी कभी तो छलक पड़ती हैं... यूँ ही आँखें
उदास होने का .....कोई सबब नहीं होता
~ बशीर बद्

---- याद रहे ,
ये ज़िन्दगी का सफ़र, सिर्फ बड़ा आदमी बनने का नहीं है ,
बल्कि आदमी बनने का भी है

कभी मेरी ऑखो को भी पढ लिया करो,
तो जाने कितने पढे लिखे हो!!

क्यूँ बताऊँ तुम्हें ?
कि..तुम जब कभी
नहीं रहती ,तो
तुम्हारे तकिए को मैं
बिल्कुल हाथ नहीं लगाता.
तकिए पे बने तुम्हारे
सर के गड्ढे को भी
संभाल के रखता हूँ..मैं.
तुम्हारे आने तक.

साजो-सामान से
सज तो गया है
घर.......
तुम
आओ
रहो........
तो प्राण-प्रतिष्ठा भी हो जाए...

मयकशी छोड़ दो जब भूल चुके हो उसको
अब शिफ़ा मिल ही गयी है तो दवायें कैसी

हाय! वो इश्क़ छुपाने के ज़माने मोहन
याद आता है ग़लत नाम से नंबर रखना.. !!

सामने तेरे यार हो और होश तेरे गुम नहीं
या तो वो यार नहीं, या फिर आशिक तुम नहीं

मुझे फर्क नहीं पड़ता कि तुम कौन हो
बस इतना जानलो कि तुम वो नहीं हो

लिखना हो कभी
तो
उसकी कहानी लिखना ।
कि मेरा तो एक था
उसके किरदार बहुत हैं ।।

मैंने जिये हैं,ऐसे..
'सदियों' जैसे 'पल'

इंतज़ार हद्द से
गुज़र जाये,फिर भी..
इंतज़ार की
'मुलायमियत' बनी रहे,
तो..जानिए
'आने वाले' में
'कोई तो' बात होगी.

अभी पक्की सड़क से गाँव मेरा दूर है साहिब
कोई पानी पिला कर आप से क़ीमत नहीं लेगा.!

अंधेरे कहीं ठहर ना जाएँ आसमान में
फैल जाती है धूप, ख़ुद ही बड़े हक़ से..

तेरी महक फ़िज़ाओं में थी,
और रंग मेरे चेहरे का खिल रहा था!!

हम क्यों गम करें
अगर वो हमें ना मिले
अरे! गम तो वो करें
जिसे हम ना मिले

एक काम करना,थोड़ी सी मिट्टी लेना,
उससे दो प्यारे से दोस्त बनाना।
इक तुझ जैसा....एक मुझ जैसा....
फिर उनको तुम तोड़ देना।
फिर उनसे दोबारा दो दोस्त बनाना,
इक तुझ जैसा...एक मुझ जैसा...
ताकि तुझ में कुछ-कुछ मैं रह जाऊँ

और मुझ में कुछ-कुछ तुम रह जाओ।
कुछ तुम जैसा कुछ मुझ जैसा.....

अपनी दोस्ती का बस
इतना सा असूल है,
जो तू कुबूल है.... तो तेरा सब कुछ
कुबूल है...

FATHER's Day

19 **जून** 2022

Dedicated to everyone's Father

"मेरी ख़ामोशियों में तैरती हैं तेरी आवाज़ें,
तेरे सीने में अपना दिल मचलते मैंने देखा है.
तुम्हारे ख़ून से मेरी रगों में ख़्वाब रौशन हैं,
तुम्हारी आदतों में ख़ुद को ढलते मैंने देखा है."

सीख

एक बड़ा सूखा पेड़ और
उसके नीचे फ़ैली पत्तिया
यही सीख देती है जीवन में ....
कैसे भी परिस्तिथि आये
अटल रहो , मत छोडो अपनी जड़े
चाहे बिखरना पड़े
क्योकि परिस्तिथिया फिर बदलेंगी
नव पल्लव नजर आयंगे
और वृक्ष फिर से हरा भरा हो जायगा
और अगर छोड़ दी अपनी जगह ही
तो वजूद ही मिट जायेगा